टिप्पणी

13

सुभद्रा कुमारी चौहान

(महादेवी वर्मा)

प्रथम: सुनो, क्या तुमने कोई कहानी पढ़ी है?

द्वितीय: हां, पढ़ी है।

प्रथम: अच्छा किसी दीवार पर बने चित्र को देखा है?

द्वितीय: वह भी देखा है।

प्रथम: क्या रेखाचित्र पढ़ा भी है?

द्वितीय: नहीं!

प्रथम: शब्दों के माध्यम से जब किसी चित्र का आभास होता है या आँखों के सामने चित्र उभरने लगते हैं, उसे रेखाचित्र कहते हैं। और इसी तरह किसी व्यक्ति अथवा जीव-जंतु के बारे में जब कोई आत्मीय प्रस्तुति की जाती है तो वह संस्मरणात्मक रेखाचित्र कहलाता है।

द्वितीय: अच्छा, तो इसके बारे में विस्तार से बताइए।

प्रथम: जरूर!

इस संवाद से स्पष्ट होता है कि इस पाठ में हम एक नई विद्या संस्मरणात्मक रेखाचित्र के बारे में पढेंगे।

चित्र रंग और ब्रश से बनाए जाते हैं किंतु जब वही चित्र शब्दों के माध्यम से बनाए जाते हैं और उससे जुड़ी जानकारी लोगों तक पहुंचाई जाती है, तो उस विधा को शब्दचित्र या रेखाचित्र कहते हैं। रेखाचित्र साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है। महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'सुभद्रा कुमारी चौहान' में सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन, कर्म और उनके सामाजिक जीवन के संघर्षों का वर्णन किया गया है इसलिए यह संस्मरणात्मक रेखाचित्र की श्रेणी में आएगा। आइए इस पाठ को पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप –

- सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- इस संस्मरणात्मक रेखाचित्र की भावगत और शिल्पगत विशेषताओं पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- राष्ट्र और समाज के विकास के लिए कर्त्तव्य-भाव, राष्ट्र चेतना जैसे अनेक मूल्यों को आत्मसात कर उन्हें प्रस्तुत कर सकेंगे;
- आत्मबोध, विश्लेषण, निर्णय क्षमता और आलोचनात्मक चिंतन का अपने जीवन में उपयोग कर उनका उल्लेख कर सकेंगे;
- अपने संपर्क में आये व्यक्तियों की विशिष्टताओं का मूल्यांकन कर उन पर रेखाचित्र लिख सकेंगे।

इस पाठ में आप प्रखर रचनाकार सुभद्रा कुमारी चौहान के बारे में पढेंगे और उनके जीवन के विविध पहलुओं से परिचित होंगे। आपकी सहायता के लिए कठिन शब्दों के अर्थ मूल पाठ के साथ दिए जा रहे हैं। आइए, इस पाठ को एक बार पढ़ लेते हैं।

13.1 मूल पाठ

सुभद्रा कुमारी चौहान

चित्र 13.1: सुभद्राकुमारी चौहान

हमारे शैशवकालीन अतीत और प्रत्यक्ष वर्तमान के बीच में समय-प्रवाह का पाट ज्यों-ज्यों चौड़ा होता जाता है त्यों-त्यों हमारी स्मृति में अनजाने ही एक परिवर्तन लक्षित होने लगता है, शैशव की चित्रशाला के जिन चित्रों से हमारा रागात्मक संबंध गहरा होता है, उनकी रेखाएँ और रंग इतने स्पष्ट और चटकीले होते चलते हैं कि हम वार्धक्य की धुँधली आँखों से भी उन्हें प्रत्यक्ष देखते रह सकते हैं। पर जिनसे ऐसा संबंध नहीं होता वे फीके होते-होते इस प्रकार स्मृति से धुल जाते हैं कि दूसरों के स्मरण दिलाने पर भी उनका स्मरण कठिन हो जाता है।

मेरे अतीत की चित्रशाला में बहिन सुभद्रा से मेरे सख्य का चित्र, पहली कोटि में रखा जा सकता है, क्योंकि इतने वर्षों के उपरांत भी उसकी सब रंग-रेखाएँ अपनी सजीवता में स्पष्ट हैं।

एक सातवीं कक्षा की विद्यार्थिनी, एक पाँचवी कक्षा की विद्यार्थिनी से प्रश्न करती है, 'क्या तुम कविता लिखती हो?' दूसरी ने सिर हिलाकर ऐसी अस्वीकृति दी जिसमें हाँ और नहीं तरल हो कर एक हो गए थे। प्रश्न करने वाली ने इस स्वीकृति-अस्वीकृति की संधि से खीझ कर कहा,

टिप्पणी

सुभद्रा कुमारी चौहान : महादेवी वर्मा

'तुम्हारी क्लास की लड़कियाँ तो कहती हैं कि तुम गणित की कापी तक में कविता लिखती हो। दिखाओ अपनी कापी' और उत्तर की प्रतीक्षा में समय नष्ट न कर वह कविता लिखने की अपराधिनी को हाथ पकड़ कर खींचती हुई उसके कमरे में डेस्क के पास ले गई। नित्य व्यवहार में आने वाली गणित की कापी को छिपाना संभव नहीं था। अत: उसके साथ अंकों के बीच में अनधिकार सिकुड़ कर बैठी हुई तुकबंदियाँ अनायास पकड़ में आ गईं। इतना दण्ड ही पर्याप्त था। पर इससे संतुष्ट न होकर अपराध की अन्वेषिका ने एक हाथ में चित्र-विचित्र कापी थामी और दूसरे में अभियुक्ता की उँगलियाँ कस कर पकड़ी और वह हर कमरे में जा-जा कर इस अपराध की सार्वजनिक घोषणा करने लगी।

उस युग में कविता-रचना अपराधों की सूची में थी। कोई तुक जोड़ता है, यह सुनकर ही सुनने वालों की मुख की रेखाएँ इस प्रकार वक्रकुंचित हो जाती थीं, मानों उन्हें कोई कटु-तिक्त पेय पीना पड़ा हो।

ऐसी स्थिति में गणित जैसे गंभीर महत्त्वपूर्ण विषय के लिए निश्चित पृष्ठों पर तुक जोड़ना अक्षम्य अपराध था। इससे बढ़कर कागज का दुरुपयोग और विषय का निरादर और हो ही क्या सकता था। फिर जिस विद्यार्थी की बुद्धि अंकों के बीहड़ वन में पग-पग उलझती है उससे तो गुरु यही आशा रखता है कि वह हर साँस को अंक जोड़ने-घटाने की क्रिया बना रहा होगा। यदि वह सारी धरती को कागज बनाकर प्रश्नों को हल करने के प्रयास से नहीं भर सकता तो उसे कम से कम सौ-पचास पृष्ठ, सही न सही तो गलत प्रश्न-उत्तरों से भर लेना चाहिए। तब उसकी भ्रांत बुद्धि को प्रकृतिदत्त मान कर उसे क्षमादान का पात्र समझा जा सकता है, पर जो तुकबंदी जैसे कार्य से बुद्धि की धार गोंठिल कर रहा है वह तो पूरी शक्ति से दुर्बल होने की मूर्खता करता है, अत: उसके लिए न सहानुभूति का प्रश्न उठता है न क्षमा का।

मैंने होंठ भींच कर न रोने का जो निश्चय किया वह न टूटा तो न टूटा। अंत में मुझे शक्ति-परीक्षा में उत्तीर्ण देख सुभद्रा जी ने उत्फुल्ल भाव से कहा, 'अच्छा तो लिखती हो। भला सवाल हल करने में एक दो तीन जोड़ लेना कोई बड़ा काम है!' मेरी चोट अभी दु:ख रही थी, परंतु उनकी सहानुभूति और आत्मीय भाव का परिचय पाकर आँखे सजल हो आईं।' तुमने सबसे क्यों बताया? का सहास उत्तर मिला 'हमें भी तो यह सहना पड़ता है। अच्छा हुआ अब दो साथी हो गए।'

बहिन सुभद्रा का चित्र बनाना कुछ सहज नहीं है क्योंकि चित्र की साधारण जान पड़ने वाली प्रत्येक रेखा के लिए उनकी भावना की दीप्ति 'संचारिणी दीपशिखेव 'बनकर उसे असाधारण कर देती है। एक-एक कर के देखने से कुछ भी विशेष नहीं कहा जाएगा, परंतु सबकी समग्रता में जो उद्भासित होता था, उसे दृष्टि से अधिक हृदय ग्रहण करता था।

मझोले कद तथा उस समय की कृश देहयष्टि में ऐसा कुछ उग्र या रौद्र नहीं था जिसकी हम वीरगीतों की कवयित्री में कल्पना करते हैं। कुछ गोल मुख, चौड़ा माथा, सरल भृकुटियाँ, बड़ी और भावस्नात आँखे, छोटी सुडौल नासिका, हँसी को जमा कर गढ़े हुए से ओठ और दृढ़ता सूचक ठुड्डी... सब कुछ मिलाकर एक अत्यंत निश्छल, कोमल, उदार व्यक्तित्व वाली भारतीय नारी का ही पता देते थे। पर उस व्यक्तित्व के भीतर जो बिजली का छंद था उसका पता तो

शब्दार्थ

कठिन शब्दों के अर्थ:
शैशवकालीन-बचपन का समय
अतीत-बीता हुआ समय
प्रत्यक्ष-समक्ष
सख्य- मित्र
धुँधली-अस्पष्ट
विद्यार्थिनी-शिक्षा ग्रहण करने वाली
स्वीकृति-सहमति
कटु-तिक्त- कड़वा-तीखा
अन्वेषिका- खोज करने वाली
कृश- कमजोर
भावस्नात- भावपूर्ण
तृप्ति-संतुष्टि
संक्रामक-छूत फैलाने वाला
अडिग-पथ से न डिगने वाला
सन्नद्ध- तैयार
प्राप्य-मिलने योग्य
कारागार-जेल
विस्मय-आश्चर्य
अनुकूल- माफिक
हीनता- हीन भावना
ग्रंथि- गांठ

टिप्पणी

तब मिलता था, जब उनके और उनके निश्चित लक्ष्य के बीच में कोई बाधा आ उपस्थित होती थी। 'मैंने हँसना सीखा है मैं नहीं जानती रोना' कहने वाली की हँसी निश्चय ही असाधारण थी। माता की गोद में दूध पीता बालक जब अचानक हँस पड़ता है, तब उसकी दूध से धुली हँसी में जैसी निश्चिंत तृप्ति और सरल विश्वास रहता है, बहुत कुछ वैसा ही भाव सुभद्रा जी की हँसी में मिलता था। वह संक्रामक भी कम नहीं थी क्योंकि दूसरे भी उनके सामने बात करने से अधिक हंसने को महत्त्व देने लगते थे।

वे अपने बचपन की एक घटना सुनाती थीं। कृष्ण और गोपियों की कथा सुनकर एक दिन बालिका सुभद्रा ने निश्चय किया कि वह गोपी बनकर ग्वालों के साथ कृष्ण को ढूँढ़ने जायेगी।

दूसरे दिन वह लकुटी लेकर गायों और ग्वालों के झुंड के साथ कीकर और बबूल से भरे जंगल में पहुँच गई। गोधूली वेला में चरवाहे और गाएँ तो घर की ओर लौट गए,पर गोपी बनने की साधवाली बालिका कृष्ण को खोजती ही रह गई। उसके पैरों में काँटे चुभ गए, कँटीली झाड़ियों में कपड़े उलझकर फट गए, प्यास से कंठ सूख गया और पसीने पर धूल की पर्त जम गई, पर वह धुनवाली बालिका लौटने को प्रस्तुत नहीं हुई। रात होते देख घरवालों ने उन्हें खोजना आरंभ किया और ग्वालों से पूछते-पूछते अँधेरे करील-वन में उन्हें पाया।

अपने निश्चित लक्ष्य-पथ पर अडिग रहना और सब कुछ हँसते-हँसते सहना उनका स्वभावजात गुण था। क्रास्थवेट गर्ल्स कालेज में जब वे आठवीं कक्षा की विद्यार्थिनी थीं, तभी उनका विवाह हुआ और उन्होंने पतिगृह के लिए प्रस्थान किया। स्वतंत्रता के युद्ध के लिए सन्नद्ध सेनानी पति को वे विवाह से पहले देख भी चुकी थीं और उनके विचारों से भी परिचित थीं। उनसे यह छिपा नहीं था कि नव-वधू के रूप में उनका जो प्राप्य है उसे देने का न पति को अवकाश है न लेने का उन्हें। वस्तुत: जिस विवाह में मंगल-कंकण ही रण-कंकण बन गया, उसकी गृहस्थी भी कारागार में ही बसाई जा सकती थी। और उन्होंने बसाई भी वहीं पर इस साधना की मर्मव्यथा को वही नारी जान सकती है जिसने अपनी देहली पर खड़े होकर भीतर के मंगल चौक पर रखे मंगल कलश तुलसी चौरे पर जलते हुए घी के दीपक और हर कोने से स्नेहभरी बाँहें फैलाए हुए अपने घर पर दृष्टि डाली हो और फिर बाहर के अंधकार, आँधी और तूफान को तौला हो और तब घर की सुरक्षित सीमा पार कर, उसके सुंदर मधुर आह्वान की ओर से पीठ फेर कर अँधेरे रास्ते पर काँटो से उलझती चल पड़ी हो। उन्होंने हँसते-हँसते ही बताया था कि जेल जाते समय उन्हें इतनी अधिक फूल-मालाएँ मिल जाती थीं कि वे उन्हीं का तकिया बना लेती थीं और लेटकर पुष्प-शैय्या के सुख का अनुभव करती थीं।

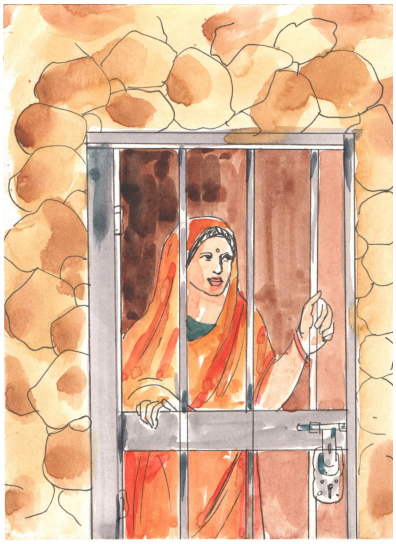

चित्र 13.2: जेल का दृश्य

एक बार भाई लक्ष्मणसिंह जी ने मुझसे सुभद्राजी की स्नेहभरी शिकायत की। 'इन्होंने मुझसे कभी कुछ नही माँगा।' सुभद्रा जी ने अर्थ भरी हँसी में उत्तर दिया था इन्होंने पहले ही दिन मुझसे

शब्दार्थ

मानसिक-बौद्धिक
तन्मयता- तल्लीनता
विशेषज्ञ- जानकार, माहिर
मध्यस्थ-बिचौलिया
एकांत- अकेले में
अनाहूत- बिन बुलाए, अनिमंत्रित
अनुदार- कठोर, संकीर्ण
सृजनशीला-रचनात्मक
क्षत-विक्षत- नष्ट, घायल
ममतामयी- माता का बच्चे के प्रति स्नेह
वात्सल्य- प्रेम, स्नेह (संतान के प्रति)
क्षणिक-क्षण भर स्थिर रहने वाला, अस्थायी
उत्तेजना- भावावेश
अंतरव्यापिनी- अंदर फैला हुआ
तारतम्य- क्रम या सिलसिला
देशकालानुसार- स्थान और समय के अनुरूप
नियत-तय
अकरणीय- न करने योग्य
संकीर्ण- संकरा या तंग
अभाव- कमी

टिप्पणी

शब्दार्थ
उग्रता- भीषण या भयानक होने का भाव
विश्ववंद्य- संसार में वंदनीय
क्षुब्ध-नाराज
औचित्य- उचित होने का भाव
त्रुटियां- गलतियाँ -
पार्थिव- काया, देह या पृथ्वी से उत्पन्न
नीलम-फलक-
चित्रशाला-चित्र बनाने या लगाने का स्थान
उत्फुल्ल-खिला हुआ
उद्भासित-प्रकाशित या चमकता हुआ
तृप्ति-संतुष्ट होने का भाव
संक्रामक-छूत फैलाने वाला
अनुगामिनी- पीछे चलने वाली
उल्लंघन-अवज्ञा करना
अवशेष-बचा हुआ या शेष भाग
अर्धांगिनी-पत्नी
पाशविक- पशुवत आचरण करने वाला
मर्मव्यथा- मनस्ताप
उद्धारक- उद्धार या सहायता करने वाला

शब्दार्थ
वार्धक्य - वृद्धावस्था
स्मृति - यादें
अन्वेषिका - शोध करने वाली
अभियुक्त - मुलज़िम, जिस पर आरोप लगा हो
वक्र-टेढ़ा, कुटिल
प्रकृतिदत्त- सहज स्वाभाविक गुण, कुदरत द्वारा प्राप्त

कुछ माँगने का अधिकार मांग लिया था महादेवी यह ऐसे ही होशियार हैं, माँगती तो वचन-भंग का दोष मेरे सर पड़ता, नहीं माँगा तो इनके अहंकार को ठेस लगती है।''

घर और कारागार के बीच में जीवन का जो क्रम विवाह के साथ आरंभ हुआ था वह अंत तक चलता ही रहा। छोटे बच्चों को जेल के भीतर और बड़ों को बाहर रखकर वे अपने मन को कैसे संयत रख पाती थीं यह सोचकर विस्मय होता है। कारागार में जो संपन्न परिवारों की सत्याग्रही माताएँ थीं, उनके बच्चों के लिए बाहर से न जाने कितना मेवा-मिष्ठान आता रहता था। सुभद्रा जी की आर्थिक परिस्थितियों में जेल-जीवन का ए और सी क्लास समान ही था। एक बार जब भूख से रोती बालिका को बहलाने के लिए कुछ नहीं मिल सका तब उन्होंने अरहर दलनेवाली महिला-कैदियों से थोड़ी-सी अरहर की दाल ली और उसे तवे पर भून कर बालिका को खिलाया। घर आने पर भी उनकी दशा द्रोणाचार्य जैसी हो जाती थी, जिन्हें दूध के लिए मचलते हुए बालक अश्वत्थामा को चावल के घोल से सफेद पानी दे कर बहलाना पड़ा था। पर इन परीक्षाओं से उनका मन न कभी हारा न उसने परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए कोई समझौता स्वीकार किया।

उनके मानसिक जगत में हीनता की किसी ग्रंथि के लिए कभी अवकाश नहीं रहा, घर से बाहर बैठ कर वे कोमल और ओज भरे छंद लिखने वाले हाथों से गोबर के कंडे पाथती थीं। घर के भीतर तन्मयता से आँगन लीपती थीं, बर्तन माँजती थीं। आँगन लीपने की कला में मेरा भी कुछ प्रवेश था, अत: हम दोनों प्रतियोगिता के लिए आँगन के भिन्न-भिन्न छोरों से लीपना आरंभ करते थे। लीपने में हमें अपने से बड़ा कोई विशेषज्ञ मध्यस्थ नहीं प्राप्त हो सका, अत: प्रतियोगिता का परिणाम सदा अघोषित ही रह गया पर आज मैं स्वीकार करती हूँ कि ऐसे कार्य में एकांत तन्मयता केवल उसी गृहणी में संभव है जो अपने घर की धरती को समस्त हृदय से चाहती हो और सुभद्रा ऐसी ही गृहणी थीं। उस छोटे से अधबने घर की छोटी सी सीमा में उन्होंने क्या नहीं संगृहीत किया। छोटे-बड़े पेड़, रंग-बिरंगे फूलों के पौधों की क्यारियाँ, ऋतु के अनुसार तरकारियाँ, गाय, बच्छे आदि-आदि बड़ी गृहस्थी की सब सज्जा वहाँ विराट दृश्य के छोटे चित्र के समान उपस्थित थी। अपने इस आकार में छोटे साम्राज्य को उन्होंने अपनी ममता के जादू से इतना विशाल बना रखा था कि उसके द्वार पर न कोई अनाहूत रहा और न निराश लौटा। जिन संघर्षों के बीच से उन्हें मार्ग वे किसी व्यक्ति को अनुदार और कटु बनाने में समर्थ थे, पर सुभद्रा के भीतर बैठी सृजनशीला नारी जानती थी कि काँटों का स्थान जब चरणों के नीचे रहता है तभी वे टूट कर दूसरों को बेधने की शक्ति खोते हैं। परीक्षाएँ जब मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य को क्षत-विक्षत कर डालती हैं तब उनमें उत्तीर्ण होने-न-होने का कोई मूल्य नहीं रह जाता।

नारी के हृदय में जो गंभीरता ममता-सजल वीर-भाव उत्पन्न होता है वह पुरुष के उग्र शौर्य से अधिक उदात्त और दिव्य रहता है। पुरुष अपने व्यक्तिगत या समूहगत रागद्वेष के लिए भी वीर धर्म अपना सकता है और अहंकार की तृप्ति-मात्र के लिए भी। पर नारी अपने सृजन की बाधाएँ दूर करने के लिए या अपनी कल्याणी सृष्टि की रक्षा के लिए ही रूद्र बनती है। अत: उसकी वीरता के समकक्ष रखने योग्य प्रेरणाएँ संसार के कोश में कम हैं। मातृशक्ति का दिव्य रक्षक उद्धारक रूप होने के कारण ही भीमाकृति चंडी, वत्सला अम्बा भी है। जो हिंसात्मक पाशविक शक्तियों को चरणों के नीचे दबाकर अपनी सृष्टि के मंगल की साधना करती है।

टिप्पणी

सुभद्रा में जो ममतामयी माँ थी, उसकी वीरता का उत्स भी वात्सल्य ही कहा जा सकता है। न उनका जीवन किसी क्षणिक उत्तेजना से संचालित हुआ न उनकी ओज भरी कविता वीर-रस की घिसी-पिटी लीक पर चली। उनके जीवन में जो एक निरंतर निखरता हुआ कर्म का तारतम्य है वह ऐसी अंतरव्यापिनी निष्ठा से जुड़ा हुआ है जो क्षणिक उत्तेजना का दान नहीं मानी जा सकती। इसी से जहाँ दूसरों को यात्रा का अंत दिखाई दिया वहीं उन्हें नई मंजिल का बोध हुआ। थक कर बैठने वाला अपने न चलने की सफाई खोजते-खोजते लक्ष्य पा लेने की कल्पना कर सकता है, पर चलने वाले को इसका अवकाश कहाँ!

जीवन के प्रति ममता भरा विश्वास ही उनके काव्य का प्राण है:

सुख भरे सुनहले बादल
रहते हैं मुझको घेरे।
विश्वास प्रेम साहस हैं
जीवन के साथी मेरे।

मधुमक्षिका जैसे कमल से लेकर भटकटैया तक के रसाल से लेकर आक तक सब मधुर-तिक्त एकत्र करके उसे अपनी शक्ति से एक मधु बनाकर लौटाती है, बहुत कुछ वैसा ही आदान-प्रदान सुभद्रा जी का था। सभी कोमल-कठिन, सह्य-असह्य अनुभवों का परिपाक दूसरों के लिए एक ही होता था। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि उनमें विवेचन की तीक्ष्ण दृष्टि का अभाव था। उनकी कहानियाँ प्रमाणित करती हैं कि उन्होंने जीवन और समाज की अनेक समस्याओं पर विचार किया और कभी अपने निष्कर्ष के साथ और कभी दूसरों के निष्कर्ष के लिए उन्हें बड़े चमत्कारिक ढंग से उपस्थित किया।

जब स्त्री का व्यक्तित्व उसके पति से स्वतंत्र नहीं माना जाता था तब वे कहती हैं, 'मनुष्य की आत्मा स्वतंत्र है। फिर चाहे वह स्त्री-शरीर के अंदर निवास करती हो चाहे पुरुष-शरीर के अंदर। इसी से पुरुष और स्त्री का अपना अपना व्यक्तित्व अलग रहता है।' जब समाज और परिवार की सत्ता के विरुद्ध कुछ कहना अधर्म माना जाता था, तब वे कहती हैं, 'समाज और परिवार व्यक्ति को बंधन में बाँधकर रखते हैं। ये बंधन देशकालानुसार बदलते रहते हैं और उन्हें बदलते रहना चाहिए वरना वे व्यक्तित्व के विकास में सहायता करने के बदले बाधा पहुँचाने लगते हैं। बंधन कितने ही अच्छे उद्देश्य से क्यों न नियत किए गए हों, हैं बंधन ही, और जहाँ बंधन है वहां असंतोष है तथा क्रांति है।

परंपरा का पालन ही जब स्त्री का परम कर्तव्य समझा जाता था तब वे उसे तोड़ने की भूमिका बाँधती हैं। 'चिर-परिचित रूढ़ियों और चिर-संचित विश्वासों को आघात पहुंचाने वाली हलचलों को हम देखना-सुनना नहीं चाहते। हम ऐसी हलचलों को अधर्म समझकर उनके प्रति आँख मींच लेना उचित समझते हैं, किंतु ऐसा करने से काम नहीं चलता। वह हलचल और क्रांति हमें बरबस झकझोरती है और बिना होश में लाए नहीं छोड़ती।'

अनेक समस्याओं की ओर उनकी दृष्टि इतनी पैनी है कि सहज भाव से कही सरल कहानी का अंत भी हमें झकझोर डालता है।

शब्दार्थ

गोंठिल - कुंठित करना
उत्फुल्ल - आनंदयुक्त
सजल - आंसू युक्त
उद्भासित - प्रकाशित
कृश देहयष्टि - कमजोर शारीरिक बनाव या कमजोर कद-काठी
संक्रामक- तेजी से फैलने वाला
तृप्ति- संतुष्टि
लकुटी- छड़ी, छोटा डंडा
मंगल-कंकण- शुभ, कल्याणकारी आभूषण
रण-कंकण - युद्ध का आभूषण
मर्मव्यथा- हृदय का भाव
पुष्प-शैय्या - फूलों की सेज
तन्मयता - लीन होना
मध्यस्थ - बीच का
अनाहूत - अनिमंत्रित
अनुदार - संकीर्ण
सृजनशीला - रचने वाली, बनाने वाली
क्षत-विक्षत - लहूलुहान, घायल
उदात्त - श्रेष्ठ, महान
उत्स - स्रोत
मधुमक्षिका - शहद की मक्खी
परिपाक - पूर्णविकास,
यथार्थवादिनी - सत्यानुयायी, सत्य बोलने वाली
अनुगामिनी - आज्ञाकारिणी, पीछे चलने वाली
अर्धांगिनी - पत्नी, सहधर्मिणी
महीयसी - उदार मन वाली, धरती के सामान सहन शक्ति वाली
क्षुब्ध - उद्विग्न, अशांत, क्षोभ युक्त
सहिष्णु - सहनशील, क्षमाशील
मूल्यांकन - समीक्षा, गुण-दोष विवेचन
श्यामल - साँवला, श्याम रंग वाला
उज्जवल - स्वच्छ, निर्मल, सफ़ेद

टिप्पणी

वे राजनीतिक जीवन में ही विद्रोहिणी नहीं रहीं, अपने पारिवारिक जीवन में भी उन्होंने अपने विद्रोह को स्फलतापूर्वक उतार कर उसे सृजन का रूप दिया।

सुभद्रा जी के अध्ययन का क्रम असमय ही भंग हो जाने के कारण उन्हें विश्वविद्यालय की शिक्षा तो नहीं मिल सकी, पर अनुभव की पुस्तक से उन्होंने जो सीखा उसे उनकी प्रतिभा ने सर्वथा निजी विशेषता दे दी है।

भाषा, भाव, छंद की दृष्टि से नये 'झाँसी की रानी' जैसे वीरगीत तथा सरल स्पष्टता में मधुर प्रगीत युक्त यथार्थवादिनी मार्मिक कहानियां आदि उनकी मौलिक प्रतिभा के ही सृजन हैं।

ऐसी प्रतिभा व्यावहारिक जीवन को अछूता छोड़ देती तो आश्चर्य की बात होती।

पत्नी की अनुगामिनी, अर्धांगिनी आदि विशेषताओं को अस्वीकार कर उन्होंने भाई लक्ष्मण सिंह जी की पत्नी के रूप में ऐसा अभिन्न मित्र दिया जिसकी बुद्धि और शक्ति पर निर्भर रह कर अनुगमन किया जा सके।

अजगर की कुंडली के समान, स्त्री के व्यक्तित्त्व को कस कर चर-चर कर देने वाले अनेक सामाजिक बंधनों को तोड़ फेंकने में उनका जो प्रयास लगा होगा, उसका मूल्यांकन आज संभव नहीं है।

उस समय बच्चों के लालन-पालन में मनोविज्ञान को इतना महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं मिला था और प्रायः सभी माता-पिता बच्चों को शिष्टता सिखाने में स्वयं शिष्टता की सीमा तक पहुँच जाते थे। सुभद्रा जी का कवि-हृदय यह विधान कैसे स्वीकार कर सकता था! अतः उनके बच्चों को विकास का जो मुक्त वातावरण मिला उसे देखकर सब समझदार निराशा से सिर हिलाने लगे, पर जिस प्रकार यह सत्य है कि सुभद्रा जी ने अपने किसी बच्चे को उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ करने के लिए बाध्य नहीं किया। उसी प्रकार यह भी सत्य है कि किसी बच्चे ने ऐसा कोई कार्य नहीं किया जिससे उसकी महीयसी माँ को किंचित भी क्षुब्ध होने का कारण मिला हो। उनके वात्सल्य का विधान ही अलिखित और अटूट था। अपनी संतान के भविष्य को सुखमय बनाने के लिए उनके निकट कोई भी त्याग अकरणीय नहीं रहा। पुत्री के विवाह के विषय में तो उन्हें अपने परिवार से भी संघर्ष करना पड़ा।

उन्होंने एक क्षण के लिए भी इस असत्य को स्वीकार नहीं किया कि जातिवाद की संकीर्ण तुला पर ही वर की योग्यता तोली जा सकती है। इतना ही नहीं, जिस कन्यादान की प्रथा का सब मूक भाव से पालन करते आ रहे थे उसी के विरुद्ध उन्होंने घोषणा की, 'मैं कन्यादान नहीं करूंगी। क्या मनुष्य मनुष्य को दान करने का अधिकारी है? क्या विवाह के उपरांत मेरी बेटी मेरी नहीं रहेगी ?' उस समय तक किसी ने, और विशेषतः किसी स्त्री ने ऐसी विचित्र और परंपरा-विरुद्ध बात नही कही थी।

देश की जिस स्वतंत्रता के लिए उन्होंने जीवन के वासंती सपने अंगारों पर रख दिए थे, उसकी प्राप्ति के उपरांत भी जब उन्हें सब ओर अभाव और पीड़ा दिखायी दी तब उन्होंने अपने संघर्षकालीन साथियों से भी विद्रोह किया। उनकी उग्रता का अंतिम परिचय तो विश्ववंद्य बापू के अस्थिविसर्जन के दिन प्राप्त हुआ। वे कई सौ हरिजन महिलाओं के जुलूस के साथ-साथ सात मील पैदल चलकर नर्मदा किनारे पहुंची पर अन्य संपन्न परिवारों की सदस्याएं मोटरों पर

ही जा सकीं। जब अस्थिप्रवाह के उपरांत संयोजित सभा के घेरे में इन पैदल आने वालों को स्थान नहीं दिया गया तब सुभद्रा जी का क्षुब्ध हो जाना स्वाभाविक ही था। उनका क्षात्रधर्म तो किसी प्रकार की अन्याय के प्रति क्षमाशील हो नहीं सकता था। जब उन हरिजनों को उनका प्राप्य दिला सकीं तभी वे स्वयं सभा में सम्मिलित हुईं।

चित्र 13.3: स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेते हुए

सातवीं-और पाँचवी कक्षा की विद्यार्थिनियों के सख्य को सुभद्रा जी के सरल स्नेह ने ऐसी अमिट लक्ष्मण-रेखा से घेर कर सुरक्षित रखा कि समय उस पर कोई रेखा नहीं खींच सका। अपने भाई-बहनों में सबसे बड़ी होने के कारण मैं अनायास ही सब की देखरेख और चिंता की अधिकारिणी बन गई थी। परिवार में जो मुझसे बड़े थे उन्होंने भी मुझे ब्रह्मसूत्र की मोटी पोथी में आँख गड़ाये देखकर अपनी चिंता की परिधि से बाहर समझ लिया था। पर केवल सुभद्रा पर न मेरी मोटी पोथियों का प्रभाव पड़ा, न मेरी समझदारी का। अपने व्यक्तिगत संबंधों में हम कभी कुतूहली बाल-भाव से मुक्त नहीं हो सके। सुभद्रा के मेरे घर आने पर भक्तिन तक मुझपर रौब जमाने लगती थी। क्लास में पहुंचकर वह उनके आगमन की सूचना इतने ऊँचे स्वर में इस प्रकार देती कि मेरी स्थिति विचित्र हो जाती, ''ऊ सहोदरा विचरिअउ तो इनका देखे बरे आइ के अकेली सूने घर माँ बैठी हैं। अउर इनका किताबिन से फुरसत नाहिन बा.'' एम.ए. बी.ए. के विद्यार्थियों के सामने जब एक देहातिन बुढ़िया गुरु पर कर्त्तव्य-उल्लंघन का ऐसा आरोप लगाने लगे तो बेचारे गुरु की सारी प्रतिष्ठा किरकिरी हो सकती थी। पर इस अनाचार को रोकने का कोई उपाय नहीं था। सुभद्रा जी के सामने न भक्तिन को डांटना संभव था न उसके कथन की उपेक्षा करना। बंगले में आकर देखती कि सुभद्रा जी रसोई-घर में या बरामदे में भानमती का पिटारा खोले बैठी हैं और उनमें से अद्भुत वस्तुएं निकल रही हैं। छोटी-छोटी पत्थर या शीशे की प्यालियाँ, मिर्च का अचार, बासी पूरी, पेडे, रंगीन चकला-बेलन, चुटीली, नीली-सुनहली चूड़ियाँ आदि-आदि सब कुछ मेरे लिए आया है, इस पर कौन विश्वास करेगा! पर वह आत्मीय उपहार मेरे निमित्त ही आता था।

ऐसे भी अवसर आ जाते थे जब वे किसी कवि-सम्मलेन में आते-जाते प्रयाग उतर नहीं पाती थीं और मुझे स्टेशन जाकर ही उनसे मिलना पड़ता था। ऐसी कुछ क्षणों की भेट में भी एक दृश्य की अनेक आवृत्तियाँ होती ही रहती थीं। वे अपने थैले से दो चमकीली चूड़ियाँ निकालकर हँसती हुई पूंछती, ''पसंद हैं? मैंने दो तुम्हारे लिए खरीदी थीं। तुम पहनने में तोड़ डालोगी। लाओ अपना हाथ, मैं पहना देती हूँ।'' पहन लेने पर वे बच्चों के समान प्रसन्न हो उठतीं।

हम दोनों जब साथ रहती थीं तब बात एक मिनिट और हँसी पाँच मिनिट का अनुपात रहता था।

टिप्पणी

उसी से प्राय: किसी सभा-समिति में जाने से पहले न हँसने का निर्णय करना पड़ता था। एक दूसरे की ओर बिना देखे गंभीर भाव से बैठे रहने की प्रतिज्ञा करके भी वहाँ पहुंचते ही एक न एक वस्तु या दृश्य सुभद्रा के कुतूहली मन को आकर्षित कर लेता और मुझे दिखाने के लिए वे चिकोटी तक काटने से नहीं चूकतीं। तब हमारी शोभा-सदस्यता की जो स्थिति हो जाती थी, उसका अनुमान सहज है।

अनेक कवि सम्मेलनों में हमने साथ भाग लिया, पर जिस दिन मैंने अपने न जाने का निर्णय और उसका औचित्य उन्हें बता दिया उस दिन से अंत तक कभी उन्होंने मेरे निश्चय के विरुद्ध कोई आग्रह नहीं किया। आर्थिक स्थितियां उन्हें ऐसे आमंतरण स्वीकार करने के लिए विवश कर देती थीं, परंतु मेरा प्रश्न उठते ही वे रख देतीं थीं, 'मैं तो विवशता से जाती हूँ, पर महादेवी नहीं जाएगी, नहीं जाएगी।'

साहित्य-जगत में आज जिस सीमा तक व्यक्तिगत स्पर्धा इर्ष्या-द्वेष है, उस सीमा तक तब नहीं था, यह सत्य है।

पर एक दूसरे के साहित्य-चरित्र-स्वाभाव संबंधी निंदा-पुराण तो सब युगों में नानी की कथा के समान लोकप्रियता पा लेता है। अपने किसी भी परिचित-अपरिचित साहित्य-साथी की त्रुटियों के प्रति सहिष्णु रहना और उसके गुणों के मूल्यांकन में उदारता से काम लेना सुभद्रा जी की निजी विशेषता थी। अपने को बड़ा बनाने के लिए दूसरों को छोटा प्रमाणित करने की दुर्बलता उनमें असंभव थी।

वसंत पंचमी को पुष्पाभरण, आलोकवसना धरती की छवि आँखों में भरकर सुभद्रा ने विदा ली। उनके लिए किसी अन्य विदा की कल्पना ही कठिन थी।

एक बार बात करते-करते मृत्यु की चर्चा चल पड़ी थी। मैंने कहा, ''मुझे तो उस लहर की सी मृत्यु चाहिए जो तट पर दूर तक आकर चुपचाप समुद्र में लौट कर समुद्र बन जाती है।''

सुभद्रा बोली, ''मेरे मन में तो मरने के बाद भी धरती छोड़ने की कल्पना नहीं है, मैं चाहती हूँ मेरी एक समाधि हो, जिसके चारो ओर नित्य मेला लगता रहे, बच्चे खेलते रहें, स्त्रियां गाती रहें और कोलाहल होता रहे। अब बताओ तुम्हारी नामधाम रहित लहर से यह आनंद अच्छा है या नहीं।''

उस दिन जब उनके पार्थिव अवशेष को त्रिवेणी ने अपने श्यामल-उज्जवल अंचल में समेट लिया तब नीलम-फलक पर श्वेत चंदन से बने उस चित्र की रेखाओं में बहुत वर्षों पहले देखा एक किशोर-मुख मुस्कराता जान पड़ा.

'यहीं कहीं पर बिखर गई वह

छिन्न विजय माला सी !

13.2 आइए समझें

अंश-1

'हमारे शैशवकालीन .....महत्त्व देने लगते थे'

आइए, इस पाठ के पहले अंश को ध्यानपूर्वक पढ़ लें। इस अंश में मुख्य रूप से तीन बातें महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रसंग: इस गद्यांश में लेखिका और सुभद्रा कुमारी चौहान के स्नेह-संबंध का वर्णन किया गया है। हमें जीवन में अनेक लोग मिलते हैं, उनमें से किसी का व्यक्तित्त्व, उनका जीवन-संघर्ष, स्नेह संबंध हमें बहुत प्रभावित और आकर्षित करता है और वे हमें हमेशा के लिए याद रह जाते हैं। उस संबंध की रंग-रेखाएँ बहुत समय बीतने के बाद भी यादों के रूप में स्पष्ट रहती हैं। महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान का आत्मीय संबंध इसी श्रेणी का है।

व्याख्या: हमारा समाज आर्थिक रूप से उपयोगी और सफल व्यक्ति को जीवन का एकमात्र आदर्श मानकर चलता है अर्थात वह विषय अच्छा है जो रोजगार दिलाये, जीवन को आर्थिक रूप से सफल बनाये। उसी में विद्यार्थी और माता-पिता अपने कर्तव्य की सार्थकता मानते हैं। इस चलन में अनेक बार विद्यार्थी की प्रतिभा को अनदेखा कर दिया जाता है। महादेवी ने स्पष्ट लिखा है कि उस समय गणित जैसे विषय में मन लगाने की अपेक्षा कविता लिखने को कितना मूर्खतापूर्ण काम समझा जाता था। उन्होंने लिखा है- ''...जो तुकबंदी जैसे कार्य से बुद्धि की धार गोंठिल कर रहा है वह तो पूरी शक्ति से दुर्बल होने की मूर्खता करता है। अत: उसके लिए न सहानुभूति का प्रश्न उठता है न क्षमा का।'' किन्तु इसके लिए महादेवी को सुभद्रा कुमारी से न सिर्फ प्रोत्साहन मिलता है अपितु आगे चलकर दोनों पथ के साथी भी बनते हैं और कविता के क्षेत्र में अपने युग का प्रतिनिधित्त्व भी करते हैं।

रूप और गुण का शब्द-चित्र - रेखाचित्र विधा में शब्दों के माध्यम से सम्बंधित व्यक्ति के बाह्य रूप और उसके गुण का वर्णन किया जाता है। यादें उस शब्द-चित्र को जीवंतता प्रदान करती हैं। प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र में भी इसी शैली का अनुसरण किया गया है। लेखिका ने सुभद्रा कुमारी को असाधारण निश्चय वाला व्यक्तित्त्व बताते हुए उनके बाह्य रूप और आंतरिक गुण का वर्णन करते हुए लिखा है-'' मझोले कद तथा उस समय की देहयष्टि में ऐसा कुछ उग्र या रौद्र नहीं था जिसकी हम वीरगीतों की कवयित्री में कल्पना करते हैं. कुछ गोल मुख, चौड़ा माथा, सरल भृकुटियाँ, बड़ी और भावस्नात आँखे, छोटी सुडौल नासिका, हंसी को जमा कर गढ़े हुए से ओठ और दृढ़ता सूचक ठुड्डी ... सब कुल मिलाकर एक अत्यंत निश्छल, कोमल, उदार व्यक्तित्त्व वाली भारतीय नारी का ही पता देते थे। पर उस व्यक्तित्त्व के भीतर जो बिजली का छंद था उसका पता तो तब मिलता था, जब उनके और उनके निश्चित लक्ष्य के भीतर में कोई बाधा आ उपस्थित होती थी।''

टिप्पणी

रेखाचित्र क्या है?

- रेखाचित्र में कम से कम शब्दों में किसी वस्तु, व्यक्ति का एक शब्दचित्र बनाया जाता है, जिससे आँखों के सामने उस वस्तु, व्यक्ति का पूरा स्वरूप उपस्थित हो जाता है।
- इसमें शब्दों के माध्यम से चित्र प्रस्तुत किया जाता है।
- यह अतीत से जुड़ा हो सकता है और वर्तमान से भी। लेखक द्वारा जिस पर रेखाचित्र लिखा जा रहा हो, उसकी बारीकी से जाँच-परख की जाती है।
- लेखक का व्यक्तित्त्व प्राय: अनुपस्थित रहता है। जबकि संस्मरण में लेखक की अनिवार्य उपस्थिति रहती है। क्योंकि संस्मरण स्मृति पर आधारित होता है।

टिप्पणी :

1. पाठ को पढ़ते समय आपके मन में यह जरूर आया होगा कि सुभद्रा कुमारी चौहान कविता लिखने को इतना महत्त्व क्यों देती हैं? दरअसल कविता लिखना एक रचनात्मक कर्म है, जो एक संवेदनशील प्राणी ही कर सकता है। समाज की कोई समस्या, कोई जरूरी बात, जो समाज द्वारा प्राय: नजरअंदाज कर दी जाती है, उसे एक रचनाकार की लेखनी से स्वर मिलता है। किसी रचना का सृजन कोई सामान्य बात नहीं है। सृजनात्मक क्षमता के बिना अनुभव को अभिव्यक्ति में बदलना मुश्किल काम है, जो बहुत अध्ययन और चिन्तन की मांग करता है। इसलिए कविता लिखना महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट काम है। अनेक रचनाएँ अपने युग का चित्र प्रस्तुत करती हैं।

2. लेखिका ने 'शैशवकालीन अतीत और प्रत्यक्ष वर्तमान' वाक्यांश का प्रयोग किया है। यादों के माध्यम से अतीत और वर्तमान प्राय: जुड़े होते हैं। अतीत के माध्यम से वर्तमान अधिक उपयोगी हो जाता है. पुरानी घटी घटनाएं, विचार, वर्तमान को नए संदर्भ प्रदान करते हैं और भविष्य के लिए नए मूल्यों और आदर्शों को गढ़ते हैं। इसलिए लेखिका ने अतीत और वर्तमान को साथ-साथ देखा है।

3. कोई व्यक्ति किसी को व्यक्तिगत रुचि के आधार पर याद कर सकता है, किंतु रचनाकार की व्यक्तिगत रूचि प्राय: उद्देश्यपरक होती है। इसीलिए वह दूसरों के लिए भी महत्त्वपूर्ण होता है। महादेवी वर्मा ने प्रभावशाली ढंग से सुभद्रा कुमारी के जीवन, व्यक्तित्त्व और संघर्ष का वर्णन किया है। जो हमारे लिए अनुकरणीय है।

4. 'अनधिकार सिकुड़ कर बैठी हुई' वाक्यांश में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया है। 'चित्र-विचित्र कॉपी' और 'क्या तुम कविता लिखती हो?' 'दिखाओ अपनी कॉपी' जैसे वाक्यांश के माध्यम से भाषा को आत्मीय बनाने और आम बोलचाल के करीब लाने का काम किया गया है। 'सिर हिलाकर ऐसी अस्वीकृति दी जिसमें हाँ और नहीं तरल होकर एक हो गए थे' जैसे वाक्य-प्रयोग मन के जटिल भाव को अभिव्यक्त करने में सफल रहें हैं।

क्रियाकलाप 13.1

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में प्राय: ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो अपने स्वभाव और काम के माध्यम से अपना अमिट प्रभाव छोड़ते हैं। आपके जीवन में भी कोई न कोई ऐसा व्यक्ति अवश्य होगा। वह माँ, पिता, भाई, बहन, मित्र, अध्यापक, डाक्टर या अन्य कोई हो सकता है। आप ऐसे व्यक्ति की किन्ही दस विशेषताओं की सूची बनाएँ जिसने आपको अत्यधिक प्रभावित किया हो।

पाठगत प्रश्न 13.1

1. महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी के संबंध को किस कोटि में रखा जा सकता है?

   (क) रागात्मक मित्र भाव का संबंध (ख) फीके संबंध

   (ग) पारिवारिक संबंध (घ) स्वतंत्रता सेनानी का संबंध

2. महादेवी कविता लिखने की बात क्यों नहीं स्वीकार करना चाहती थीं?

   (क) कविता लिखना अक्षम्य अपराध था

   (ख) सुभद्रा कुमारी से परिचय नहीं था

   (ग) गलत और गैरजरूरी बात मानी जाती थी

   (घ) क्योंकि गणित की कापी में कविता लिखी थी

अंश-2

'वे अपने बचपन की ..... चमत्कारिक ढंग से उपस्थित किया'।

आइए, इस अंश की महत्त्वपूर्ण बातों को समझते हैं जिसमें सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्त्व के अनेक गुणों का वर्णन है।

दृढ़-इच्छाशक्ति - सुभद्रा कुमारी चौहान बचपन से ही दृढ इच्छाशक्ति वाली थीं। अपने लक्ष्य-पथ पर निश्चय के साथ आगे बढ़ना और हंसते-हंसते सब कुछ सहना उनके स्वभाव का प्रमुख गुण था। इसका उदाहरण उनकी बचपन की कहानी से मिलता है। कृष्ण को ढूंढने ग्वालों के साथ जंगल में गई बालिका सुभद्रा रात होने के बावजूद कृष्ण को ढूँढती रही। गोपी बनने की इच्छा लिए उन्हें यह भी याद नहीं रहा कि घर लौटना है। लेखिका ने उसका वर्णन करते हुए लिखा है- ''उसके पैरों में काँटे चुभ गए, कँटीली झाड़ियों में कपड़े उलझकर फट गए, प्यास से कंठ सूख गया और पसीने पर धूल की पर्त जम गई, पर वह धुन वाली बालिका लौटने को प्रस्तुत नहीं हुई।'' बाद में यही दृढ इच्छाशक्ति और लक्ष्य के प्रति निश्चय उन्हें स्वाधीनता आन्दोलन के प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में स्थापित करती है।

टिप्पणी

राष्ट्रीय भावना - सुभद्रा कुमारी ने अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बजाय राष्ट्र की आकांक्षाओं और जरुरत को महत्त्व दिया और नववधू के रूप में पति की भांति स्वतंत्रता आन्दोलन में शामिल हो गईं। अनेक बार जेल भी गईं। उन्होंने घर की सुरक्षित सीमा के बजाय अधिक मुश्किल और कठिन मार्ग अपनाया। अपने लक्ष्य पर विश्वास और दृढ निश्चय के कारण छोटे बच्चों के साथ जेल के अंदर होने पर भी उनका मन संयत और धैर्यवान बना रहा। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन जिस बलिदान की मांग कर रहा था, सुभद्रा कुमारी उसके लिए सदैव तत्पर रहीं। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी उनका मन न हारा न ही उसे अनुकूल बनाने के लिए उन्होंने कोई समझौता किया।

सरल और सहज जीवन - सुभद्रा कुमारी के मन में अपनी आर्थिक स्थिति को लेकर कोई दुख और हीन भावना नहीं थी। उन्हें जो मिला वह उससे संतुष्ट थीं। वह जिन हाथों से कोमल और ओज भरे छंद लिखती थीं, उन्हीं हाथों से गोबर के कंडे पाथती थीं, आँगन लीपती थीं। उनके छोटे से अधबने घर में पेड़, सब्जियां, गाय-बछड़े सब मौजूद थे, जिसे उन्होंने अपनी ममता के जादू से बाँध रखा था। अनेक अभावों और कष्ट में वह मुस्कुराती हुई पारिवारिक और राष्ट्रीय जिम्मेदारियों को निभाती रहीं।

जीवन के प्रति आस्थावान - जीवन के प्रति ममता भरा विश्वास ही उनके जीवन और रचनाओं का प्राण है, जिसे वह अपनी रचनाओं में और जीवन में बार-बार पाने का प्रयास करती रही हैं। अपने मीठे-कड़वे अनुभवों के माध्यम से दूसरों के जीवन में मधु घोलने का कार्य करती रहीं।

टिप्पणी :

इन विशेषताओं के साथ-साथ कुछ और पक्ष इस प्रकार हैं:-

1. अभाव और कष्ट व्यक्ति को तोड़ देते हैं। अनेक बार व्यक्ति अपनी परिस्थिति से हार कर समझौता कर लेता है और समझौते के माध्यम से परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करता है। किन्तु विपरीत स्थिति में जो अपने लक्ष्य के लिए सर्वस्य त्याग की भावना से आगे बढ़ता है, वही लोगों के लिए उदाहरण बनता है। सुभद्रा कुमारी ने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए अपने सुख और सुविधा का त्याग कर आन्दोलन का रास्ता चुना।

2. हीनता की भावना हमें मानसिक रूप से कमजोर बनाती है। हमें अनुदार और कटु बनाती है। हमारी रचनात्मकता को नष्ट करती है। इसके मूल में भी अभाव का ही भाव है। किन्तु जो मिला है, उसे पर्याप्त समझकर उसका सार्थक उपयोग करते हुए जो लोग आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं, वह सदैव सार्थक जीवन जीते हैं।

3. सरल और प्रवाहमयी साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया गया है। लकुटी, खटिया, तुलसी-चौरा जैसे देशज शब्द। अनाहूत, क्षणिक, रण-कंकण, उदात्त, वत्सला जैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है, तो गर्ल्स, कॉलेज, जेल-जीवन, ए और सी क्लास जैसे अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। तत्कालीन आम बोलचाल की भाषा की छाप सर्वत्र है।

क्रियाकलाप 13.2

स्त्री-पुरुष के संदर्भ में क्या व्यक्ति प्रदत्त है और क्या समाज द्वारा निर्मित है? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

पाठगत प्रश्न 13.2

1. लेखिका ने नारी के वीर भाव को उदात्त इसलिए माना है, क्योंकि?
   (क) वह ममता सजल कल्याणी वीर भाव है
   (ख) व्यक्तिगत या समूहगत राग-द्वेष से युक्त होता है।
   (ग) अहंकार की तृप्ति मात्र होती है।
   (घ) वह चंडी और अम्बा का रूप मानी जाती है।
2. सुभद्रा कुमारी घर और कारागार के बीच संतुलन स्थापित करने में कैसे सफल हुई?
   (क) मानसिक हीन-भावना के कारण
   (ख) परिस्थितियों से समझौता करके
   (ग) अपनी आर्थिक स्थिति के कारण
   (घ) मानसिक धैर्य और दृढ़-निश्चय के द्वारा
3. सुभद्रा कुमारी ने अपने घर की छोटी सी सीमा में क्या-क्या संगृहीत किया था?
   (क) गोबर-कंडे
   (ख) रंग-बिरंगे फूल और तरकारियाँ
   (ग) गाय-बछड़े
   (घ) उपर्युक्त सभी

अंश - 3

जब स्त्री का व्यक्तित्त्व.....स्वयं सभा में सम्मिलित हुई।

इस अंश में मुख्य रूप से उनके व्यक्तित्त्व के तीन पक्ष उल्लेखनीय हैं। आइए, समझते हैं।

उदार चेतना वाली - सुभद्रा कुमारी चौहान स्वतंत्र चेतना से युक्त थीं। उस समय जब स्त्री का व्यक्तित्त्व उसके पति से अलग नहीं माना जाता था, पति को केंद्र में रखकर ही उसका अस्तित्त्व परिभाषित किया जाता था, तब वे 'मनुष्य की आत्मा की स्वतंत्रता' की बात करती

टिप्पणी

थीं। उन्होंने कहा है- ''मनुष्य की आत्मा स्वतंत्र है। फिर चाहे वह स्त्री शरीर के अंदर निवास करती हो चाहे पुरुष शरीर के अंदर'' अर्थात स्त्री-पुरुष के बजाय उन्होंने मनुष्य और उसकी स्वतंत्रता को अपनी रचनाओं का केन्द्रीय विषय बनाया है। बंधन को उन्होंने असंतोष और क्रांति का कारण माना है, फिर चाहे वे कितने अच्छे उद्देश्य से क्यों न तय किए गए हों।

विचारों से आधुनिक - सुभद्रा कुमारी की कथनी और करनी में विशेष अंतर नहीं है। उनका विद्रोह महज सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों तक ही सीमित नहीं था, बल्कि पारिवारिक जीवन में भी उसका पालन किया। पुत्री के विवाह के अवसर पर परिवार के विरुद्ध जाकर अपनी जाति से अलग 'वर' को स्वीकार किया। जाति प्रथा की संकीर्ण परंपरा को अस्वीकार करते हुए उन्होंने मनुष्यता को महत्त्व दिया। यहाँ तक की कन्यादान की प्रथा का भी विरोध इस आधार पर किया कि मनुष्य मनुष्य के दान का अधिकारी कैसे हो सकता है- ''मैं कन्यादान नहीं करूंगी। क्या मनुष्य मनुष्य को दान करने का अधिकारी है? क्या विवाह के उपरांत मेरी बेटी मेरी नहीं रहेगी?'' उस समय इस तरह की विचित्र लगने वाली बात कोई नहीं करता था। स्त्रियों के लिए तो यह और भी मुश्किल काम था। किन्तु मनुष्यता के पक्ष में सुभद्रा कुमारी न सिर्फ ऐसा कहती हैं अपितु उसका अपने जीवन में अनुसरण भी करती हैं।

स्वाधीनता के प्रति नवीन दृष्टि - उन्होंने खुली आँखों से देश की स्वतंत्रता के सपने देखे थे। उसके लिए संघर्ष किया था। उनके लिए देश की स्वतंत्रता का अर्थ केवल अंग्रेजों की गुलामी से ही मुक्ति नहीं थी, अपितु देश के अंदर प्रचलित अनेक बुराइयों जैसे जातिवाद, ऊँच-नीच का भेदभाव, धार्मिक वैमनस्यता इत्यादि से भी मुक्ति थी। तभी सही मायनों में व्यक्ति और देश स्वतंत्र कहा जा सकता है। गाँधी जी के अस्थिविसर्जन के बाद संयोजित सभा में जब कई सौ हरिजन महिलाओं को शामिल होने के लिए मौका नहीं दिया गया तो उन्होंने इस अन्याय के विरोध में अपने साथियों के विरुद्ध ही संघर्ष छेड़ दिया और स्वयं तब उस सभा में सम्मिलित हुईं जब उन महिलाओं को उनका हक दिला सकीं। लेखिका ने सुभद्रा कुमारी के बारे में ठीक ही लिखा है कि उनके व्यक्तित्त्व और रचना में द्वैत नहीं था न ही उनकी रचना और जीवन में मनुष्यता, विश्वास, साहस, स्वतंत्रता आजीवन उनके मूल्य बने रहे।

टिप्पणी :

सुभद्रा कुमारी चौहान की ये अद्भुत विशेषताएं हमें आज भी महत्त्वपूर्ण संदेश देती हैं। आइए उनके जीवन के पक्षों को और विस्तार से पढ़ते हैं।

1. स्त्री-पुरुष में शारीरिक अलगाव व्यक्ति द्वारा निर्धारित है। किन्तु उनसे सम्बंधित नियम-कानून समाज द्वारा बनाये जाते हैं। अत: उन नियमों-कानूनों की समय-समय पर जाँच आवश्यक है। अगर कोई नियम स्त्रियों की स्वतंत्रता और उनके व्यक्तित्त्व के विकास में बाधक हो तो उस पर बात होनी चाहिए। सवाल उठाया जाना चाहिए और उसे परिवर्तित भी किया जाना चाहिए। मनुष्य के सारे हक पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी मिलने चाहिए।

2. सुभद्रा कुमारी कहती हैं कि बंधन कितने अच्छे उद्देश्य से क्यों न लगाये गए हों, हैं बंधन ही और जहाँ बंधन है वहां असंतोष है तथा क्रांति है। किन्तु यह समझना जरूरी है कि व्यवस्था को बनाये रखने के लिए अनेक बार बंधन जरूरी भी होते हैं। किन्तु वे

तार्किक और मानवीय होने चाहिए। जो अमानवीय हैं, शोषण का यंत्र हैं, उनके विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए। सुभद्रा कुमारी का संघर्ष ऐसे ही अमानवीय नियमों से है।

3. परंपरा का अर्थ है सौंपना। वह जरुरी बात जो एक पीढ़ी आने वाली पीढ़ी को सौंपती है। किन्तु अनेक बार कुछ रूढ़ियाँ परंपरा के नाम पर प्रचलित हो जाती हैं और समाज उनके अनुसार ही व्यवहार करने लगता है। किन्तु ऐसी रूढ़ियों को अधर्म समझना और उससे संघर्ष करना आवश्यक है। वर की जाति देखना, ऊँच-नीच का भेद-भाव इत्यादि ऐसी ही सामाजिक कमजोरियां हैं।

4. महादेवी वर्मा अनेक बार दो विपरीत बातों को आमने-सामने रखकर संदर्भ को और रोचक बनाती हैं। जैसे पत्नी की अनुगामिनी, अर्धांगिनी आदि विशेषताओं को अस्वीकार कर अपने पति लक्ष्मण सिंह जी को अभिन्न मित्र के रूप में श्रेष्ठ स्थान दिया। इसी प्रकार गद्य में लय का प्रयोग भी अनेक स्थानों पर दिखाई पड़ता है, जैसे स्त्री के व्यक्तित्त्व को कस कर चर-चर इत्यादि। अजगर की कुंडली के समान जैसे वाक्यांशों के माध्यम से भाषा को मुहावरेदार भी बनाती चलती हैं। इस पाठ में ऐसे अनेक प्रयोग मिलते हैं जो शुद्ध साहित्यिक भाषा होने के बावजूद कथ्य को रोचक, प्रवाहपूर्ण और समझने योग्य बनाते हैं।

5. रचना हो या जीवन, उबाल और क्षणिक उत्तेजना उसे सही दिशा नहीं दे सकते हैं. इसलिए जीवन में धैर्य और शांतचित्त होना आवश्यक है। ये विशेषताएं हमारे जीवन के लिए भी श्रेयस्कर और उपयोगी हैं। आप विद्यार्थी जीवन में हैं। आपके समक्ष अनेक चुनौतियाँ आती होंगी, उनका सामना करने के लिए श्रेष्ठ विचार होने चाहिए. यह संस्मरणात्मक रेखाचित्र हमें नयी दिशा देता है।

क्रियाकलाप 13.3

आसपास के पाँच पुरुष और पाँच महिलाओं से बातचीत करें और उनके जीवन के चुनौतियों की सूची बनाएं:

पाठगत प्रश्न 13.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन में पत्नी के कौन से स्वरूप को उभारा गया है?

   (क) अनुगामिनी के रूप में (ख) अर्धांगिनी के प्रचलित रूप में

   (ग) सहयोगी मित्र के रूप में (घ) आंदोलनकारी के रूप में

2. 'मनुष्य की आत्मा स्वतंत्र है', इस पंक्ति से क्या अभिप्राय है?

   (क) मनुष्य परंपरा पालन से मुक्त है।

टिप्पणी

(ख) स्त्री-पुरुष अलग-अलग सत्ताएं हैं।

(ग) बंधन व्यक्ति का विकास रोकते हैं।

(घ) परिवार और सामाजिक संस्थाएं बंधन हैं।

3. इस पाठ के अनुसार बंधन से मुक्ति का स्वरूप कैसा होना चाहिए?

(क) सामाजिक पारिवारिक मान्यताओं और रूढ़ियों से मुक्ति

(ख) अंग्रेजी शासन से मुक्ति

(ग) तार्किक और मानवीय

(घ) उपर्युक्त सभी

अंश - 4

सातवीं और पाँचवी कक्षा की.....छिन्न विजय माला सी!

इस अंश के महत्त्वपूर्ण विंदुओं को विस्तार से समझते हैं।

पहली बात यह दिखाई देती है कि सुभद्रा कुमारी और महादेवी वर्मा के रिश्ते का आधार स्नेह और विश्वास है। सुभद्रा जिस अधिकार के साथ लेखिका का ख्याल रखती हैं उसमें स्नेह है, विश्वास है, अधिकार का भाव है और साथीपन है। उम्र में बहुत बड़ी न होने के बावजूद सुभद्रा महादेवी के लिए कुछ न कुछ खाने का सामान, वस्त्र आदि ले जाना अपना दायित्व समझती हैं। लेखिका का ध्यान रखना उनकी आदत का हिस्सा बन गया था। मित्रता और बहिनापा की सीमाएं मिलकर एक हो गई हैं।

दूसरी विशेषता यह प्रकट होती है कि सुभद्रा कुमारी चौहान न गैरजरूरी बंधन स्वीकार करती थीं न ही अन्य किसी पर अपना निर्णय थोपती थीं। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उन्हें काव्य-सम्मेलनों में जाना पड़ता था। लेकिन जब महादेवी ने काव्य-गोष्ठियों में शामिल न होने का निर्णय लिया तो उन्होंने उनके उस निर्णय का हमेशा सम्मान किया। इस बारे में किसी को लेखिका पर दबाव बनाने भी नहीं दिया।

यह भी गौरतलब है कि साहित्यकारों के प्रति सुभद्रा हमेशा सहिष्णु रहीं। जहाँ अवसर मिला, उन लोगों की विशेषताओं को उदारता के साथ रेखांकित किया। अपने को बड़ा बनाने के लिए दूसरों को छोटा प्रमाणित करने का कार्य उन्होंने कभी नहीं किया।

साथ ही, जब तक वे जीवित रहीं, उनका जीवन समाज को समर्पित था और मृत्यु के बाद भी वह इसी का हिस्सा बने रहने को तत्पर थीं। उनकी इच्छा थी कि मैं मरने के बाद भी धरती से जुड़ी रहना चाहती हूँ। मेरी समाधि पर रोज मेला लगता रहे, बच्चे खेलते रहें, स्त्रियां गाती रहें, शोर-गुल होता रहे। इस प्रकार मृत्यु के उपरांत भी जीवन का उल्लास और उत्सव चलता रहे। समाज उनकी सार्थकता की कसौटी है, जिसे अपने विचारों और कार्यों के द्वारा वे बार-बार प्रमाणित करती हैं।

टिप्पणी :

इन विशेषताओं को देखकर आप समझ गए होंगे कि महादेवी वर्मा ने बड़ी बारीकी से सुभद्रा कुमारी के जीवन के छोटे-छोटे पक्षों को यहाँ उद्घाटित किया है। इनके माध्यम से निम्नलिखित तथ्य भी उभरकर सामने आते हैं।

1. हमें अपना निर्णय किसी पर थोपने के बजाय उसके निर्णय के कारण को समझना और सम्मान करना चाहिए और उसे स्वतंत्रता देनी चाहिए. काव्य-सम्मेलनों में न जाने के महादेवी के निर्णय का सुभद्रा न केवल सम्मान करती हैं अपितु उनके इस निर्णय के साथ खड़ी भी रहती हैं।

2. स्वयं को बड़ा साबित करने के लिए किसी को छोटा नहीं दिखाना चाहिए। बल्कि अपने व्यक्तित्त्व को बड़ा बनाने का प्रयास करना चाहिए. बाकी काम जन-सामान्य करता है। सुभद्रा कुमारी ने इसी तरह का उदार और गरिमामय जीवन जिया।

3. व्यक्ति की सार्थकता अकेले में नहीं, अपितु समाज में ही सिद्ध होती है. समाज में किये गए आपके काम आपके योगदान को समाज ही सराहता और उसका अनुकरण करता है। सुभद्रा मृत्यु के बाद भी जीवन का हिस्सा बने रहने में अपनी सार्थकता देखती हैं।

13.3 शिल्प-सौंदर्य

1. इस संस्मरणात्मक रेखाचित्र में आम बोलचाल की साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया गया है। यह सरल साहित्यिक हिंदी भाषा है, जिसमें बाल चाल में प्रचलित अनेक भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया गया है। महादेवी वर्मा का दौर सांस्कृतिक पुनरुत्थान का है, इसलिए उस दौर के अधिकतम साहित्यकारों ने तत्सम भाषा का बहुत रचनात्मक प्रयोग किया है। महादेवी वर्मा ने भी तत्सम भाषा का प्रयोग किया है। तत्सम प्रधान भाषा का अर्थ है, ऐसे शब्द जो संस्कृत से हिंदी में आ गए हों।

   तत्सम- शैशवकालीन, स्मृति, वार्धक्य, अन्वेषिका, कृश, नासिका, संगृहीत, क्षणिक, व्यापिनी, विश्ववंद्य, विसर्जन, पुष्पाभरण, आलोकवसन, श्यामल, उज्ज्वल इत्यादि

   तद्भव- बहिन, लीपना, तरकारी, भींचना इत्यादि

   अंग्रेजी- डेस्क, कॉपी, क्लास, गर्ल्स, कॉलेज इत्यादि

   अरबी-फारसी- फलक

2. प्रवाहमयता इस संस्मरणात्मक रेखाचित्र की एक अन्य विशेषता है। प्रवाहमयता भाषा का वह गुण है जो किसी रचना को पठनीय देता है। किसी पाठ में यह गुण लोगों से जुड़ने वाले भाव और शब्दों के उपयुक्त चयन, तथा उनके सटीक प्रयोग पर निर्भर होता है। इस पाठ में तत्सम, तद्भव के साथ विदेशी भाषा के अनेक शब्दों का प्रयोग किया गया है। किंतु महादेवी वर्मा ने सुभद्रा कुमारी की कथा के साथ उनका इस प्रकार से प्रयोग किया है कि पाठ सहज रूप में संप्रेषणीय हो गया है। पाठक भाव और भाषा दोनों से सहज ही जुड़ जाता है। इस प्रयोग वैशिष्ट्य के कारण प्रस्तुत रेखाचित्र की भाषा में प्रवाह आ गया

है।

3. चित्रात्मकता भाषा का ऐसा गुण है, जिसमें कही गयी बात दृश्य रूप में पाठक के सामने उपस्थित हो जाती है और पाठक उस कथा या जीवन को अपने सामने घटते हुए महसूस करता है। इस पाठ में भी ऐसे अनेक स्थल हैं। जैसे 'वह लकुटी लेकर गायों और ग्वालों के झुंड के साथ कीकर और बबूल से भरे जंगल में पहुँच गई' अरहर की दाल को तवे पर भूनकर बालिका को खिलाना इत्यादि।

4. मानवीकरण अलंकार का प्रयोग भी इस पाठ में है। हालांकि मात्रा की दृष्टि से इस अलंकार का प्रयोग सीमित है। उदाहरण के लिए- 'अनधिकार सिकुड़कर बैठी हुई तुकबंदिया'।

5. शैली आत्मीय है, जो स्मृति बिंबों को उभारने में समर्थ है। साथ ही अत्यंत आत्मीय ढंग से हम तक पहुंचती है और हम से जुड़ती है। अपने और सुभद्रा कुमारी के संबंध को जिस असीम स्नेह के साथ लेखिका ने व्यक्त किया है वह हमें गहरी आत्मीयता का अनुभव कराता है।

6. लेखिका ने सुभद्रा कुमारी को याद करने के क्रम में साहित्य और कलाओं की प्रचलित पूर्वदीप्त शैली का प्रयोग किया है। इसे अंग्रेजी में "फ्लैशबैक टेक्नीक भी कहा जाता है। पूरे पाठ में महादेवी वर्मा स्वयं मौजूद रही हैं, इससे जहाँ पाठ अधिक प्रमाणिक बना है वहीं रेखाचित्र और संस्मरण की सीमाएं आपस में घुल-मिल गयी हैं।

13.4 आपने क्या सीखा (चित्रात्मक प्रस्तुति)

सुभद्रा कुमारी चौहान

बाह्य पक्ष

1. मझोला कद
2. कृश देहयष्टि
3. गोल मुख
4. चौड़ा माथा
5. सरल भृकुटियाँ
6. बड़ी और भावस्नात आँखे
7. छोटी सुडौल नासिका
8. दृढ़ता सूचक ठुड्डी

आंतरिक विशेषताएँ

1. निश्चल
2. कोमल और उदार व्यक्तित्त्व
3. लक्ष्य के प्रति दृढ़-निश्चयी और अडिग
4. स्वतंत्रता सेनानी
5. मन को संयत रखने वाली
6. ममतामयी और स्नेहिल
7. विद्रोही और कर्त्तव्यशील
8. हीन ग्रंथि से मुक्त
9. स्वतंत्र व्यक्तित्त्व

13.5 सीखने के प्रतिफल

- अपनी रचनात्मक क्षमता का इस्तेमाल करते हुए संस्मरण और रेखाचित्र विधा का प्रयोग अपनी लेखनी में करते हैं।
- सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों व घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- सरल भाषा और शब्दावली के प्रयोग से अपनी अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाते हैं।

13.6 योग्यता विस्तार

लेखिका परिचय : महादेवी वर्मा

चित्र 13.4: महादेवी वर्मा

'सुभद्रा कुमारी चौहान' महादेवी वर्मा का संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। इसमें साहित्य की दोनों विधाएं रेखाचित्र और संस्मरण के तत्त्व शामिल हैं। इसमें सुभद्रा कुमारी के वाह्य आकार, चरित्र की खास-खास बातों का चित्रण किया गया है। इन बातों का शब्द-चित्र स्मृति के आधार पर उकेरा गया है और इसमें संस्मरण लिखने वाली और जिस पर संस्मरण लिखा गया, दोनों का व्यक्तित्त्व प्रकाशित हुआ है।

संस्करण और रेखाचित्र साहित्य की अलग-अलग विधाएं हैं, किन्तु महादेवी वर्मा ने अपनी रचनाओं में दोनों को इस प्रकार पिरोया है कि दोनों एक अलग विधा प्रतीत होती हैं. उन्होंने अपनी बात में स्वीकार भी किया है कि मेरे संस्मरणों में रेखाचित्र भी सम्मिलित हो जाते हैं, जिसका स्पष्ट कारण मेरा रेखांकन प्रेम ही कहा जायेगा। अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, मेरा परिवार जैसी कृतियों में उनके प्रमुख संस्मरणात्मक रेखाचित्र संकलित हैं। महादेवी वर्मा के रेखाचित्र यथार्थ जीवन की समझ प्रस्तुत करते हैं। उनके अधिकतर पात्र समाज के ऐसे तबके से आते हैं, जिनके लिए अशिक्षा और गरीबी के कारण जीवन की मूलभूत सुविधाएं प्राप्त करना बड़ी चुनौती होती है, किन्तु दैन्यता के साथ उसकी अदम्य जिजीविषा, संघर्ष और जीवन के प्रति उसका अनुराग उसे पाठकों की संवेदना का भागीदार बनाता है।

महादेवी वर्मा ने जितने मनोयोग से सामान्य जन पर लिखा है उतने ही मनोयोग से पशु-पक्षियों पर भी लिखा है, जो 'मेरा परिवार' नामक पुस्तक में संगृहीत हैं। 'पथ के साथी' संग्रह में उन साहित्यकारों का परिचय है, जिनसे महादेवी वर्मा की घनिष्ठता थी। इन संस्मरणों में संबंधित व्यक्तित्त्व से महादेवी के घनिष्ठ संबंधों की जानकारी तो मिलती है, साथ ही उनका राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन में महत्त्व भी परिलक्षित होता है। 'सुभद्रा कुमारी चौहान' उनका ऐसा ही संस्मरणात्मक रेखाचित्र है, जो उन दोनों के आत्मीय संबंधो के साथ सुभद्रा कुमारी चौहान के पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय जीवन से संबंधित विचारों और संघर्षों को हमारे सामने प्रस्तुत करता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं। उनका जन्म इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) के निकट निहालपुर गाँव में एक संपन्न परिवार में हुआ था। उनका विवाह खंडवा (मध्य प्रदेश) निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ हुआ था। पति के साथ वे भी स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़ी और अनेक बार जेल गईं और यातनाएं सहीं। झाँसी की रानी इनकी प्रसिद्ध कविता है। 15 फरवरी 1948 को एक सड़क दुर्घटना में उनका निधन हो गया। इनकी जीवनी इनकी पुत्री सुधा चौहान ने 'मिला तेज से तेज' नाम से लिखी है। इनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

कविता संग्रह :

1. मुकुल (1930)
2. त्रिधारा (चुनी हुई कविताएँ)

कथा संग्रह:

1. बिखरे मोती (1932)
2. उन्मादिनी (1934)
3. सीधे-साधे चित्र (1947)

13.7 पाठांत प्रश्न

अति लघुत्तरीय प्रश्न

क. इस पाठ को साहित्य की किस विधा के अंतर्गत रखा जाना चाहिए? स्पष्ट कीजिए।

ख. सुभद्रा कुमारी को महादेवी वर्मा की कविताएं किस विषय की कॉपी में मिलीं?

ग. सुभद्रा कुमारी चौहान के पति का नाम क्या था?

घ. लेखिका सुभद्रा कुमारी का वर्णन वीरगीतों की कवयित्री के रूप में क्यों नहीं करना चाहती?

ङ. सुभद्रा कुमारी और लेखिका के आत्मीय संबंध को आप किस शब्द से परिभाषित करना चाहेंगे?

लघुउत्तरीय प्रश्न

क. सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्त्व की किन विशेषताओं की तरफ लेखिका ने ध्यान आकर्षित किया है?

ख. सुभद्रा कुमारी मरने के बाद भी समाज का अंग क्यों बने रहना चाहती हैं?

ग. जेल-जीवन और गृहस्थी के बीच सुभद्रा कुमारी को क्यों संतुलन साधना पड़ा?

घ. गणित की कॉपी में कविता लिखने को लेखिका ने अक्षम्य अपराध क्यों माना है?

ङ. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सुभद्रा को दुख और पीड़ा का अनुभव क्यों हुआ?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. लेखिका क्यों नहीं चाहती हैं कि उनके द्वारा कविता लिखने की बात सबको पता चले?
2. सुभद्रा कुमारी के वाह्य रूप और आंतरिक गुणों की चर्चा कीजिए।
3. 'स्वतंत्रता आन्दोलन में सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं के स्थान पर जनसामान्य की भावनाओं का सम्मान किया।' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. सुभद्रा कुमारी के मन में अपनी आर्थिक स्थिति को लेकर कोई हीन भावना क्यों नहीं थी?
5. 'सुभद्रा कुमारी चौहान ने सार्वजनिक जीवन के बंधनों का सदैव विरोध किया।' इस तथ्य का मूल्यांकन कीजिए।
6. इस पाठ की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

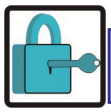

13.8 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर 13.1

1. (क) 2. (ग)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर 13.2

1. (क) 2. (घ) 3. (ग)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर 13.3

1. (ग) 2. (ग) 3. (घ)